अभिभावकों की दृष्टि में न्यून साक्षरता के कारण एवं सुझाव

डॉ० बुद्धि प्रकाश गोस्वामी *
प्रो० रजनी शर्मा *

प्रत्येक युग में शिक्षा का एक ही उद्देश्य रहा है मनुष्य का सर्वांगीण विकास। शिक्षा की पद्धतियाँ भिन्न–भिन्न हैं किन्तु उद्देश्य तो एक ही है। बालक की मौखिक शिक्षा उसे आगे के लिए तैयार करती है। शिक्षित व्यक्ति द्वारा समाज का आधुनिकीकरण किया जा सकता है। शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा अज्ञानता का अधिंयारा दूर कर ज्ञान की रोशनी फैलाती है।

भारत सरकार ने राजस्थान के प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह सिंह कोठारी की अध्यक्षता में जुलाई, सन् 1964 में गठित कोठारी आयोग की सिफारिशों पर सन् 1968 में देश की प्रथम शिक्षा नी´ घोषित की। शिक्षा प्रसार के स्तर पर भौगोलिक तथा कृषि अर्थव्यवस्था का विशेष प्रभाव पड़ता है क्योंकि अधिकांश जनसंख्या गाँवों (72 प्रतिशत) में निवास करती है जो कृषि कार्यों में संलग्न है तथा कृषि परम्परागत साधनों के आधार पर की जाती है। राजस्थान में सर्वप्रथम अजमेर से शिक्षा के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। सन् 1819 में अजमेर पादरी जेवेज केरी को शिक्षा अधिकारी नियुक्त कर अजमेर तथा पुष्कर में अंग्रेजी स्कूल खोले गये। शिक्षा के आधुनिकीकरण में जयपुर राज्य अग्रणी रहा है। यहाँ के महाराजा रामसिंह द्वितीय ने सन् 1844 में जयपुर में महाराजा हाई स्कूल की स्थापना की किन्तु दुर्भाग्य से आजादी के 62 वर्ष बाद भी राजस्थान में शिक्षा का स्तर संतोषजनक नहीं है। जनजातीय जिलों में यह आंकड़ा सर्वाधिक निम्न है। सभी संभागों में उदयपुर संभाग ऐसा है जहाँ साक्षरता की स्थिति अत्यधिक न्यून है। बांसवाड़ा जिले में 6 से 11 व 11 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के छात्र–छात्राओं का महायोग 3,69,407 है। अतः बांसवाड़ा जिले में साक्षरता की न्यून दर के कारणों को जानने के लिए प्रस्तुत शोध की योजना बनाई गई।

अध्ययन का उद्देश्य

साक्षर एवं निरक्षर अभिभावकों की राय के आधार पर न्यून साक्षरता के कारणों को ज्ञात करना।

शोध विधि

न्यून साक्षरता के कारणों को ज्ञात करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

---

* प्रवक्ता, वसुन्धरा महिला शिक्षक प्रक्षिशण महाविद्यालय, अचरोल
* श्री अग्रसेन स्नातकोतर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

न्यादर्श

शोध छात्र द्वारा बांसवाड़ा जिले के 7 विकास खण्डों के 1000 निरक्षर एवं साक्षर अभिभावकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

बांसवाड़ा जिले में न्यून साक्षरता से कारणों का सर्वेक्षण करने हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में पाँच आयामों के आधार पर प्रदत्त संकलित किया गया है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या :–

बांसवाड़ा जिले में न्यून साक्षरता के संदर्भ में विभिन्न कारणों की भूमिका को निम्न तालिका में प्रतिशत रूप में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1– अभिभावको की दृष्टि में न्यून साक्षरता के कारणों का विवरण–

संख्या (छ)		निरक्षर अभिभावक (560)	साक्षर अभिभावक (440)
न्यून साक्षरता के कारण			
1	पारिवारिक	62-5 %	62-6 %
2	सामाजिक	47-88 %	59-51 %
3	आर्थिक	60-26 %	74-98 %
4	धार्मिक	44-76 %	47-61 %
5	राजनैतिक	41-24 %	54-57 %

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि निरक्षर व साक्षर भिभावकों से प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि निरक्षर अभिभावक रिवारिक कारणों को (62.5%) अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं वही साक्षर अभिभावकों का मानना कि आर्थिक कारण (74.98%) न्यून साक्षरता हेतु सर्वाधिक जिम्मेदार है निरक्षर अभिभावक शः दूसरे स्थान (60.25%) पर आर्थिक एवं तीसरे स्थान पर (47.88%) सामाजिक कारणों न्यून साक्षरता हेतु महत्वपूर्ण मानते हैं जबकि साक्षर अभिभावक दूसरे स्थान पर (62.6%) रिवारिक कारणों को अधिक जिम्मेवार मानते हैं।

तालिका 2– साक्षर एवं निरक्षर अभिभावकों से न्यून साक्षरता के कारणों से सम्बन्धित विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विवरण।

आयाम		निरक्षर अभिभावक N (560)		साक्षर अभिभावक N (440)		टी–मूल्य
		M	σ	M	σ	
1	पारिवारिक कारण	43.75	5.90	43.85	7.32	0.97
2	सामाजिक कारण	33.52	8.31	41.66	9.11	0.0003
3	आर्थिक कारण	42.18	6.91	52.48	7.41	0.002
4	धार्मिक कारण	31.33	4.72	33.33	7.83	2.35*
5	राजनैतिक कारण	28.87	4.75	38.20	6.99	3.72**

** .01 विश्वास स्तर पर सार्थक

* .05 विश्वास स्तर पर सार्थक

तलिका 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि निरक्षर व साक्षर अभिवको के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में पारिवारिक कारणों की भूमिका से प्राप्त आकंड़ों में निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोणों का मध्यमान क्रमशः 43.75 व 43.85 तथा मानक विचलन क्रमशः 5. 90 व 7.32 प्राप्त हुआ है। सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.97 है जो कि df 998 पर तालिका मूल्य .05 स्तर से काफी कम है। अतः यह स्पष्ट है कि निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में पारिवारिक कारणों की भूमिका में कोई अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों ने ही सर्वसम्मति से पारिवारिक कारणों को बांसवाड़ा जिले की न्यून साक्षरता हेतु उत्तरदायी माना है ।

- निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में पारिवारिक कारणों की भूमिका से प्राप्त आकंड़ों में निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोणों का मध्यमान क्रमशः 33.52 व 41.66 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.31 व 9.11 प्राप्त हुआ है निरक्षर अभिभावकों का मध्यमान साक्षर अभिभावकों की तुलना में कम है जिससे यह स्पष्ट होता है कि न्यून साक्षरता के लिए सामाजिक कारणों को महत्वपूर्ण मानने में निरक्षर अभिभावकों का अभिमत साक्षर की तुलना में कम है किन्तु सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.0003 है जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) 998 पर तालिका मूल्य .05 स्तर से कम है। अतः यह स्पष्ट है कि निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में सामाजिक कारणों की भूमिका में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है अर्थात् दोनों ही सर्वसम्मति से सामाजिक कारणों को बांसवाड़ा जिले की न्यून साक्षरता

हेतु बराबर उत्तरदायी मानते हैं किन्तु इनको न्यून साक्षरता हेतु पूर्ण जिम्मेदार नहीं माना जा सकता क्योंकि इनका मध्यमान काफी कम है।

- निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में आर्थिक कारणों की भूमिका से प्राप्त आकंडों में निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोणों का मध्यमान क्रमशः 42.18 व 52.48 तथा मानक विचलन क्रमशः 6.91 व 7.41 प्राप्त हुआ है। सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.002 है जो कि df 998 पर तालिका मूल्य .05 स्तर से कम हैं अतः स्पष्ट है कि निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में आर्थिक कारणों की भूमिका में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। अर्थात् दोनों ने ही सर्वसम्मति से आर्थिक कारणों को बांसवाड़ा जिले की न्यून साक्षरता हेतु बराबर उत्तरदायी माना है किन्तु आर्थिक कारणों को पूर्ण जिम्मेदार नहीं माना है।
- निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में धार्मिक कारणों की भूमिका से प्राप्त आकंड़ों में निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोणों का मध्यमान क्रमशः 31.33 व 33.33 तथा मानक विचलन क्रमशः 4.72 व 7.83 प्राप्त हुआ है। सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर प्राप्त टी–मूल्य 2.35 है जो कि df 998 पर तालिका मूल्य .05 स्तर से अधिक हैं अतः यह कहा जा सकता है कि निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में धार्मिक कारणों की भूमिका में अन्तर पाया जाता है। अर्थात् साक्षर अभिभावक धार्मिक कारणों को बांसवाड़ा जिले की न्यून साक्षरता हेतु उत्तरदायी मानते हैं।
- निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में राजनैतिक कारणों की भूमिका से प्राप्त आकंड़ों में निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोणों का मध्यमान क्रमशः 28.87 व 38.20 तथा मानक विचलन क्रमशः 4.75 व 6.99 प्राप्त हुआ है। सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर प्राप्त टी–मूल्य 3.72 है जो कि df 998 पर तालिका मूल्य .01 स्तर से अधिक है। अतः निरक्षर व साक्षर अभिभावकों के दृष्टिकोण से निरक्षरता के संदर्भ में राजनैतिक कारणों की भूमिका में अन्तर पाया जाता है। अर्थात् दोनों का दृष्टिकोण इस संदर्भ में अलग–अलग है। मध्यमानों का अन्तर इस बात को दर्शाता है कि साक्षर अभिभावक राजनैतिक कारणों को न्यून साक्षरता हेतु अधिक उत्तरदायी मानते है जबकि निरक्षर ऐसा नही मानते है।

निष्कर्ष

साक्षर एवं निरक्षर अभिभावकों द्वारा बांसवाड़ा जिले में निम्न साक्षरता के संदर्भ प्रदतों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों ही निरक्षरता के लिए पारिवारिक कारणों को अधिक महत्व देते हैं जबकि साक्षर अभिभावक आर्थिक कारणों को बांसवाड़ा जिले में न्यून साक्षरता के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

- अग्रवाल, जे.सी. (2009): रीसेन्ट डेवलपमेंट एण्ड ट्रेड्स इन एजुकेशन विथ स्पेशल रिफरेन्स टू इण्डियन, न्यू डेल्ही शिप्रा प्रकाशन पृ. 300।
- आहूजा,राम (2005): 'समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएं', रावत पब्लिकेशन, पृ. स. 109।
- गहलोत, जगदीश सिंह (1992): 'राजस्थान का सामाजिक जीवन',रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ. सं.–57।
- चौहान, सी.पी.एस.(2009): एजुकेशन फॉर ऑल इन इण्डियाः ए सेकेण्ड लुक, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ लाइफलौंग एजुकेशन, वाल्यूम–28 टेलर एण्ड फ्रान्सिस लिमिटेड।
- जैकब (1993): प्रोब्लेम्स ऑफ इलिट्रेसी इन इण्डिया, इण्डियन जर्नल ऑफ एडल्ट एजुकेशन, वाल्युम–54, न0 1।
- पाण्डेय, विमल चन्द्र (1994): 'प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास', भाग–1, राज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.–94।
- महावीर (2004): महिला शिक्षा शिविर की गुणवत्ता एवं प्रभाव का अध्ययन, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, झालना, जयपुर।
- रायज़ादा, बी. एस.(1997): 'शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,, पृ. सं. 462।
- हुसैन, युसूफ (1999): 'ग्लिंपसेज ऑफ मिडिवल इंडियन कल्चर', ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, बोम्बे, पृ. सं. 139।